city भास्कर

JAIPUR, MONDAY, 11/07/2016

माय स्पेस

▪ पंकज शर्मा
माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

एक्सीडेंट रोकने के लिए लगे व्हीकल्स में सेंसिंग सिस्टम

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर इंसान जल्दी में है। इस हड़बड़ी में हर दिन रोड एक्सीडेंट के बारे में हम पढ़ते हैं। हाल ही में एक स्कूल स्टूडेंट की भी सड़क एक्सीडेंट में डेथ हो गई थी। जब इनके रीजन देखते हैं तो सुनने में आता है कि ड्राइवर फोन पर बात कर रहा था या ओवर स्पीड में था या ड्राइवर नशे में था। आज कई यंगस्टर्स को भी रोड पर रेस लगाते और हाई स्पीड में ड्राइव करते देखा जा सकता है। इस तरह बेफिक्री से ड्राइव करना कई बार खुद के साथ दूसरों के लिए भी परेशानी का सबब बन जाता है। वहीं नशा करके गाड़ी चलाना तो आम बात हो गई है। जिसका खुद पर कंट्रोल नहीं है, वह गाड़ी को कैसे कंट्रोल कर सकता है। इसके अलावा रेड लाइट क्रॉस करना, फोन पर बात करना, ओवर स्पीड, हेलमेट नहीं लगाना आदि एक्सीडेंट के अन्य कारण हैं। लोगों को इसके लिए अवेयर होना जरूरी है। हमारी थोड़ी-सी सावधानी कई एक्सीडेंट को रोक सकती है। सुरक्षा की दृष्टि से अच्छी क्वालिटी का हेलमेट पहनना जरूरी है।

एडवांस टेक्नोलॉजी के बढ़ते दौर में एक्सीडेंट से बचाव के लिए गाडियों में ब्रेथ लायजर सेंसर होने चाहिए, जिससे अगर कोई नशे

आरयू में शुरू हुई इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश के एक्सपर्ट्स ले रहे हैं हिस्सा

बच्चों में कॉमनसेंस ही मैथ्स है, उसे डवलप करने की जरूरत

INTERNATIONAL CONFERENCE

सिटी रिपोर्टर • राजस्थान यूनिवर्सिटी के मैथेमेटिक्स डिपार्टमेंट की ओर से रविवार को 'रीसेंट एडवांसेज इन मैथेमेटिक्स एंड देयर एप्लीकेशंस' सब्जेक्ट पर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस की शुरुआत हुई। कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश की यूनिवर्सिटीज से मैथ्स के प्रोफेसर्स और एक्सपर्ट्स के साथ ही रिसर्च स्कॉलर्स हिस्सा ले रहे हैं। डिपार्टमेंट हैड प्रो.आर एन जाट ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में एक्सपर्ट्स ने मैथ्स के एप्लीकेशंस, नोवल थ्योरीज और टेक्नीक्स पर चर्चा की। साथ ही बताया कि बच्चों में मैथ्स की रुचि काफी कम देखी जाती है। इसकी एक वजह टीचर्स भी हैं अगर टीचर्स बच्चों को रट्टा मारने की जगह बेसिक क्लियर कराने पर ध्यान दें तो मैथ्स को लेकर बच्चों में जो फोबिया है वो खत्म हो सकता है। वहीं एक्सपर्ट्स ने मैथ्स से जुड़े अपने सीक्रेट फॉर्मूला भी शेयर किए।

X की वैल्यू निकालने के लिए घर से बाहर जाता

पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रो. एस के तोमर ने बताया कि जब स्कूल में थे तो

ज्यादातर सवालों में आता एक्स (X) की वैल्यू पता कीजिए। उसे जानने के लिए हमारे और आसपास के खेतों का एरिया निकालता था। बस तभी से मैथ्स से दोस्ती हो गई। आज टीचर्स सिर्फ सवाल दे रहे हैं और करना जरूरी है इसलिए स्टूडेंट्स कैसे भी उन्हें कर रहे हैं। लेकिन बच्चों को मैथ्स के बेसिक और प्रेक्टिकल की जरूरत है। पहले टीचर्स और स्टूडेंट्स के बीच इंटरेक्शन होता था, वह कल्चर अब खत्म हो गया है।

मैथ्स के फॉर्मूलों से करें शैतानी

एमडी यूनिवर्सिटी रोहतक से आए प्रो.एन आर गर्ग कहते हैं कि टीचर्स का

इंट्रेस्ट लेकर मैथ्स ना पढ़ाने की वजह से बच्चों को मैथ्स का फोबिया हो जाता है। मैं स्कूल में मैथ्स पढ़ते समय मैथ्स के एल्फा, बीटा, कॉस, थीटा सभी से शैतानी करता था। इसके लिए जो भी मन में आता वही सवाल अपने टीचर से करता था जिससे फेस पर ग्लो आने के साथ ही मैथ्स अच्छी लगती थी। अब बच्चे सिर्फ जेन्यून सवाल ही पूछना चाहते हैं, लेकिन मन में जो भी आए पूछना चाहिए चाहे वो गलत ही हो। क्या पता उस गलत सवाल से ही कोई नया कॉन्सेप्ट मिल जाए।

कुंजियों से नहीं होती है बेसिक क्लियर

बिट्स पिलानी से आए सी बी गुप्ता कहते हैं कि हमारे अंदर कॉमनसेंस

है, वही मैथ्स है। आजकल तो कई टीचर कुंजियों से पढ़ाते हैं और स्टूडेंट्स भी कुंजियों की मदद लेते हैं जिससे मैथ्स के बेसिक क्लियर नहीं कर पाते और मैथ्स उन्हें डराने लगती है। बच्चों को प्रैक्टिकल नॉलेज की बहुत जरूरी है। स्कूल के अलावा भी छोटे बच्चों को कोई चीज दे दी जाए और कहा जाए कि सभी लोगों में बराबर बांटनी है वो अपने कॉमनसेंस से सभी में बराबर बांटेगा बस वही तो मैथ्स है।

हर चीज को क्वांटिटी व काउंटिंग के जैसे देखें

कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के प्रो. वी पी कौशिक ने बताया कि मैथ्स मेरे लिए कुछ

नहीं, सिर्फ एक रास्ता है जो हर चीज की तुलना क्वांटिटी से करता है। उसी तरह से एक्सप्रेस करता है। बच्चे को बचपन से ही काउंटिंग, कोई चीज बांटना आदि सिखाते हैं उसे क्या पता की यही मैथ्स है। एक बच्चे ने मुझे 10 सवालों के जवाब देने को कहा। मुझे सिर्फ 2 के जवाब मिले बाकी में से 3 गलत थे। जब टीचर से मैंने पूछा तो उसे भी वो नहीं आए पर उसने बच्चे के लेवल से ऊपर की बुक से वे सवाल सॉल्व करने के लिए दिए थे।